मुकाबला अंतिम चरण में

अगले सप्ताह के मंगलवार यानी 3 नवंबर को वोट पड़ने वाले हैं। दोनों प्रत्याशियों के बीच होने वाली टीवी डिबेट्स अमेरिकी मतदाताओं का मूड तय करने के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण मानी जाती रही हैं। इस बार राष्ट्रपति ट्रंप के कोरोना संक्रमित हो जाने के कारण डिबेट का एक राउंड नहीं हो सका।

मनमोहन कुमार।।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में दोनों प्रत्याशियों के बीच टीवी डिबेट का सिलसिला खत्म हो जाने के बाद मुकाबला अंतिम चरण में पहुंच चुका है। अगले सप्ताह के मंगलवार यानी 3 नवंबर को वोट पड़ने वाले हैं। दोनों प्रत्याशियों के बीच होने वाली टीवी डिबेट्स अमेरिकी मतदाताओं का मूड तय करने के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण मानी जाती रही हैं। इस बार राष्ट्रपति ट्रंप के कोरोना संक्रमित हो जाने के कारण डिबेट का एक राउंड नहीं हो सका। जो दो राउंड हुए उनमें पहला खासा तनावपूर्ण और बकझक वाला रहा। दूसरा और आखिरी राउंड काफी हद तक शांत माना गया, जिसका अर्थ यह लगाया जा रहा है कि इससे मतदाताओं की मनःस्थिति पर कोई बड़ा प्रभाव नहीं पड़ने वाला।

अब तक के सर्वेक्षण ट्रंप को बाइडन से काफी पीछे बता रहे हैं, मगर याद रखना जरूरी है कि अमेरिकी चुनाव प्रक्रिया खासी जटिल है। इसमें वोटर सीधे तौर पर प्रत्याशी को वोट नहीं देते। अपने वोट से वे इलेक्टोरल कॉलेज को चुनते हैं, जिनकी संख्या हर राज्य में अलग–अलग होती है और कुछ राज्यों में एक भी वोट ज्यादा पाने वाले प्रत्याशी को उस राज्य के इलेक्टोरल कॉलेज के सारे वोट मिल जाते हैं। ऐसे में आम मतदाताओं के बीच दिख रही भावनाओं के आधार पर प्रत्याशियों की जीत–हार का अनुमान लगाना हमेशा रिस्की होता है। पिछले, यानी 2016 के चुनावों में हिलैरी क्लिंटन अधिक वोट पाकर भी चुनाव हार गईं। उन्हें आम वोटरों का ज्यादा समर्थन मिला, लेकिन इलेक्टोरल कॉलेज के वोटों में ट्रंप बाजी मार ले गए।

बहरहाल, ट्रंप और बाइडन की जद्दोजहद अभी जारी है। अलबत्ता इस बीच वोटिंग भी चालू है और 5 करोड़ से ऊपर मतदाता वोट डाल चुके हैं। वजह यह कि कोरोना से जुड़े हालात को देखते हुए इस बार अर्ली वोटिंग की पात्रता में कुछ ढील दी गई है। इसका फायदा उठाकर लोग बड़ी संख्या में अभी से वोट डाल रहे हैं । इसे इस बात का संकेत माना जा रहा है कि कोरोना जैसी भीषण महामारी के हालात भी वोटरों का उत्साह कम नहीं कर पाए हैं। जो दूसरा कारक इन चुनावों को यादगार बना रहा है, वह है 'ब्लैक लाइव्स मैटर' आंदोलन। इस चुनावी वर्ष में एक अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड की श्वेत पुलिसकर्मी द्वारा दिनदहाड़े की गई हत्या ने अमेरिका में ऐसे आंदोलन को जन्म दिया जिसमें हर उम्र, वर्ग और नस्ल के लोग शामिल हुए। इसी क्रम में डेमोक्रैट प्रत्याशी जो बाइडन द्वारा उपराष्ट्रपति पद के लिए भारतीय मूल की कमला हैरिस को नामांकित करना भी चर्चा में है। इन सबका चुनाव नतीजों पर आखिरी प्रभाव तो नतीजे घोषित होने के बाद ही पता चलेगा, लेकिन इसमें दो राय नहीं कि बदजुबानी, बीमारी और नस्लवाद की कशमकश के बीच हो रहे 2020 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव इतिहास में एक यादगार घटना के रूप में दर्ज हो रहे हैं।

श्रेष्ठ ब्राह्मण

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

चलिए इस बात का उत्तर मैं केवल एक वाक्य में दे देता हूँ। इस कथा के सत्य या असत्य होने का प्रश्न ही नहीं उठता क्यूंकि मूल वाल्मीकि रामायण में शम्बूक नामक कोई पात्र है ही नहीं। इसके अतिरिक्त रामचरितमानस में भी गोस्वामी तुसलीदास ने ऐसे किसी भी पात्र का वर्णन नहीं किया है। ये कथा सत्य है या असत्य, इसे तीन मुख्य बातें सिद्ध करती हैरू यदि किसी ग्रन्थ में मिलावट करनी हो, विशेषकर रामायण जैसे महाग्रंथ में तो उसे अंतिम भाग में ही किया जा सकता है। ऐसा ही कुछ इस कथा के साथ भी है जिसे उत्तर कांड के बिलकुल अंत में, सर्ग ७६ में जोड़ा गया है। इसमें कहा गया है कि श्रीराम शम्बूक को ढूंढने पुष्पक विमान में जाते हैं जबकि वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम के राज्याभिषेक के बाद विभीषण ने पुष्पक विमान कुबेर को लौटा दिया था।

संपादकीय

कोई रियायत नहीं

दूसरी ओर बाइडन के चुनावी प्रचारों में कहा जाता है कि ट्रंप चीन को लेकर कड़वी बातें तो कहते हैं लेकिन उन्हें जमीन पर नहीं उतारते। बाइडन कहते हैं कि ट्रंप का चीन के खिलाफ व्यापार युद्ध खोखला साबित हुआ जिससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को ही नुकसान हुआ। वह चीन से कोई रियायत नहीं हासिल कर सके। बाइडन कहते हैं कि ट्रंप के शासन काल में अमेरिका दुनिया में नेतृत्वकारी भूमिका से पीछे हटा है। ट्रंप के शासन काल के पहले दिन से ही चीन के हाथ मजबूत होने शुरू हुए। उन्होंने अमेरिकी गठजोड़ों को कमजोर कर अमेरिका के हाथ कमजोर किए हैं। बकौल बाइडन, ट्रंप ने अमेरिकी मूल्यों का त्याग किया और अमेरिकी जनतंत्र को नीचा दिखाया। साफ है कि बाइडन और ट्रंप दोनों ने अमेरिकी मतदाताओं का दिल जीतने के लिए चीन विरोधी रुख अपनाया है। दोनों की कोशिश अमेरिका में चीन विरोधी माहौल का फायदा उठाने की है। चीन के प्रति आम अमेरिकी लोगों की उग्र भावनाओं को देखते हुए दोनों प्रत्याशियों के खेमों ने कहा है कि चीन नियम आधारित विश्व व्यवस्था के लिए खतरा है लेकिन दोनों पक्षों के लोग कह रहे हैं कि अगले की पराजय चीन की जीत होगी। ट्रंप अपने को इस रूप में पेश कर रहे हैं कि वह अमेरिका के ऐसे पहले राष्ट्रपति हैं जो चीन के सामने डट कर खड़े हुए और चीन की भक्षक व्यापार नीति और औद्योगिक जासूसी का पर्दाफाश कर सके। आगे चलकर इस स्थिति का लाभ उठाना भारतीय रणनीतिकारों के लिए एक बड़ी चुनौती साबित होगा।

वैसे ही अमेरिका में राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का खेमा कह रहा है कि यदि विपक्षी प्रत्याशी जो बाइडन यह चुनाव जीत गए तो चीन खुश होगा और अमेरिका पर उसका मालिकाना कायम हो जाएगा।

जुमलेबाजी से आगे

रंजीत कुमार।।

जैसे भारतीय चुनावों में सत्तापक्ष के लोग चुनावी भाषणों में आरोप लगाते हैं कि विपक्ष जीता तो पाकिस्तान में पटाखे छूटेंगे, वैसे ही अमेरिका में राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का खेमा कह रहा है कि यदि विपक्षी प्रत्याशी जो बाइडन यह चुनाव जीत गए तो चीन खुश होगा और अमेरिका पर उसका मालिकाना कायम हो जाएगा। इसके उलट जो बाइडन कह रहे हैं कि ट्रंप केवल जुमलेबाजी करते हैं, उनकी सारी बातें हवा–हवाई हैं जिनसे जमीनी स्तर पर चीन को कोई फर्क नहीं पड़ता। दोनों प्रत्याशियों के दावों और प्रतिदावों से यह स्पष्ट हो गया है कि दोनों पक्षों की राय में चीन अमेरिका के लिए खतरा है। भले ही अमेरिकी चुनाव में अर्थव्यवस्था, कोरोना, रंगभेद और जजों की नियुक्ति का मामला प्रमुखता से बहस का विषय बना हुआ है लेकिन जिस तरह दोनों पक्ष एक दूसरे से बड़ा चीन विरोधी होने का दावा कर रहे हैं, उससे लगता है कि वाइट हाउस में कोई भी रहे, चीन के प्रति अमेरिका का रवैया सख्त ही रहेगा। फिर भी इस सख्ती में ट्रंप और बाइडन के लहजे का फर्क साफ दिखता है।

वैसे तो डेमोक्रेट प्रत्याशी जो बाइडन ने चीन के राष्ट्रपति शी चिन फिंग को ठग कह कर अपना

कड़ा तेवर दिखाया है लेकिन चुनाव जीतने के बाद वह शी की ठगी से कैसे निबटेंगे और भारत को लेकर चीन की ठगी को वह कितनी अहमियत देंगे, इस पर अभी साफ–साफ कुछ कहना मुश्किल होगा। उनकी पार्टी द्वारा 'अमेरिका लीड्स' नाम का जो 613 पेज का विधेयक अमेरिकी कांग्रेस में पेश किया जाने वाला है उसके लक्ष्यों में भारत का जिक्र सतही तौर पर ही है। लीड्स से मतलब है दृ लेबर, इकनॉमिक्स, अलायंसेज, डेमोक्रेसी और सिक्यॉरिटी। इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए अमेरिका 350 अरब डॉलर का प्रावधान कर चीन को सभी क्षेत्रों में पछाड़ने की विशेष रणनीति पर अमल करेगा। दुनिया के दूसरे क्षेत्रों की तुलना में भारत का जिक्र हाशिये में ही किए जाने से लगता है कि भारत जो बाइडन की प्राथमिकता में नहीं रहेगा। विधेयक में उन्होंने कनाडा के दो नागरिकों की चीन में गिरफ्तारी और उसके आक्रामक रवैये पर टिप्पणी की है, पर भारत–चीन सीमा पर चीन के आक्रामक रुख का कोई जिक्र नहीं किया है।

लीड्स विधेयक में किए गए प्रावधानों से साफ है कि जो बाइडन चीन के मुकाबले तकनीक और उद्योग से लेकर सुरक्षा तक हर क्षेत्र में अमेरिका को फिर खड़ा करने के लिए अपने राष्ट्रीय हितों के मद्देनजर ही कदम उठाएंगे। इसमें डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन की हिंद प्रशांत नीति का मामूली जिक्र ही आने से लगता है कि एशिया के इलाके में वह चीन से एक सीमा तक ही टकराने की रणनीति अपनाएंगे। अमेरिका लीड्स विधेयक में ट्रंप प्रशासन की क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया का समूह) पहल का भी कोई जिक्र नहीं होना चीन को राहत प्रदान करेगा। उसने दक्षिण चीन सागर से लेकर हिंद महासागर तक में अपनी जो आक्रामक नीति पेश की है, उससे कैसे मुकाबला किया जाए, इसका भी जिक्र बाइडन के अमेरिका लीड्स विधेयक में नहीं है।

लीड्स विधेयक में मानवाधिकारों पर जोर दिया गया है जो चीन से अमेरिका के टकराव को बढ़ाएगा लेकिन मानवाधिकारों पर फोकस भारत के लिए भी चिंता की ही बात होगी।

सूडोकु नवताल- 5515

मध्यम

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5514 का हल

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9

Jagrutidaar.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

अमेरिकी जनमत को चीन के खिलाफ

मोहन। जो बाइडन जब अमेरिका के उपराष्ट्रपति थे तब वह चीन के साथ विशेष रिश्तों के हिमायती थे लेकिन लगता है कि जिस तरह कोरोना वायरस ने अमेरिकी जनमत को चीन के खिलाफ किया है, उससे वह सहम गए हैं और चीन को लेकर उनकी आंखें खुली हैं। उनकी पुरानी चीन समर्थक नीतियों की वजह से ही चीन बाइडन को अमेरिकी राष्ट्रपति के तौर पर देखना चाहता है लेकिन डॉनल्ड ट्रंप ने जिस तरह चीन को लेकर अमेरिकी जन–भावनाओं का दोहन करने की आक्रामक रणनीति अपनाई है उसे देखते हुए बाइडन चीन के चमचे जैसी अपनी छवि अमेरिकी जनता के बीच नहीं पेश करना चाहेंगे। हालांकि पुरानी चीन समर्थक छवि के मद्देनजर अमेरिकी जनता में उनकी विश्वसनीयता पर सवाल बने रहेंगे। ट्रंप याद दिलाते हैं कि जब विश्व व्यापार संगठन में चीन की सदस्यता का मसला उठा तो सीनेट में चीन के सबसे बड़े पैरोकार बाइडन ही थे।